ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 316-317

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

दलितों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने में डॉ० भीमराव रामजी अम्बेडकर का योगदान

मुन्नु कुमार
शोध अध्येता– राजनिति विज्ञान, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार) भारत।

Received- 19.08.2020, Revised- 22.08.2020, Accepted - 25.08.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : ***भारतीय समाज मुख्यतः सवर्ण और दलित–समूह के रूप में विभाजित है। सवर्ण–समूह के भीतर अनेक जातियाँ मौजूद हैं और दलित शब्द पिछड़े, अति पिछड़े, अनुसूचित जाति और जनजातियों के एक बड़े समूह का प्रतिनिधित्व करता है। भारत में यह स्तरीकरण संसार के अन्य समाजों के सामाजिक स्तरीकरण से अधिक जटिल है। यह स्तरीकरण का परम्परागत रूप है जो थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ आज भी विद्यमान है। दलित–समूह सामाजिक और आर्थिक रूप से सवर्णों से निम्न होते हैं। अस्पृश्यता और सामाजिक निषेध सामाजिक भेदभाव की कसौटी है। यह समाज को ऊँच–नीच में श्रेणीब(करता है।1 यद्यपि दलित–समूह के बीच विभिन्न जातियों के बीच ऊँच–नीच का भेद–भाव विद्यमान होता है। परन्तु वंचित जमात की अवधरणा के अन्तर्गत यह समूह संगठित है। दलित जातियों को सैकड़ों वर्षों से अधिकारविहीन रखा गया, जबकि ब्राह्मण सहित अन्य सवर्ण जातियों को समाज में सारे अधिकार प्राप्त थे। अधिकार–विहीन लोगों के उ(ार के लिए ही डॉ० अम्बेडकर ने व्यापक राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रम चलाया।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय समाज, सवर्ण, दलित–समूह, पिछड़े, अति पिछड़े, अनुसूचित जाति, प्रतिनिधित्व।

दलितवादी परिप्रेक्ष्य का अर्थ सिर्फ एक जाति की समस्याओं के निराकरण पर विचार करना नहीं है। यह समस्त पीड़ित समुदायों की समस्याओं पर विचार करता है। यह समस्या एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में है। इसके केन्द्र में दलित–मुक्ति और राष्ट्रीय मुक्ति का प्रश्न है। इसलिए दलित विमर्श के केन्द्र में वे सारे सवाल हैं, जिनका सम्बन्ध भेदभाव से है, चाहे वे भेद–भाव जाति के आधर हो, नस्ल के आधर हो, लिंग के आधर हों या पिफर धर्म के आधर पर क्यों न हों।2 डॉ० अम्बेडकर ने अपने सामाजिक आन्दोलनों के क्रम में दलितों के समय समस्याओं पर विचार किया। उन्होंने अछूत–दलितों के उपार के लिए अध्कि काम किया।

आधुनिक भारत में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा फूले, महात्मा गांधी और कुछ अन्य महामनाओं ने अपने–अपने तरीके से दलितो के प्रयास किये हैं। लेकिन इन सभी व्यक्तियों का कार्य–क्षेत्र बहुत व्यापक था और दलितो उनके विविधतापूर्ण क्षेत्र का अंग था। लेकिन डॉ० अम्बेडकर दलितो के प्रति समर्पित थे। यह उनके जीवन का सर्वप्रमुख संकल्प था। उन्होंने दलितों में चेतना उत्पन्न की, उन्हें संगठित किया, उन्हें सवर्णों के अत्याचारों का विरोध करने के लिए प्रेरित किया और हिन्दू–समाज के उच्च वर्गों को यह समझाने का प्रयास किया कि दलितों के प्रति अन्याय की स्थिति को बनाये रखना स्वयं सवर्णों और हिन्दू–समाज के लिए घातक कि होगा। ए०आर० देसाई, अम्बेडकर और दलित आन्दोलन के सम्बन्ध में लिखते हैं–"डॉ० अम्बेडकर ने उनकी तकलीफों के खिलाफ आवाज बुलन्द की और उनके मूलभूत मानवीय अध्किारों के लिए जमकर संघर्ष किया।"3

दलितो डॉ० अम्बेडकर के जीवन का लक्ष्य था और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि डॉ० अम्बेडकर ने दलितो के प्रति कोरे सैद्वान्तिक दृष्टिकोण को नहीं, बल्कि यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया। उन्होंने दलितों की स्थिति के लिए समाज के उच्च वर्गों को उत्तरदायी ठहराने के साथ–साथ इस बात को स्वीकार किया और दलितों के समक्ष इस बात पर जोर दिया कि दलितों को अपनी बुरी आदतें और हीनता की भावना का त्याग कर आत्मसम्मानपूर्ण जीवन की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। उन्होंने अपने पत्रों और भाषणों में इस बात पर जोर दिया कि अछूतों को भीख माँगना, झूठ बोलना तथा मुर्दा जानवर खाना छोड़ देना चाहिए। इन सबके अतिरिक्त उन्हें हीनता की भावना का त्याग कर स्वतंत्राता, समानता और स्वाभिमान के साथ जीवन बिताने का संकल्प लेना चाहिए। उनके सुझाव थे–"दलित शिक्षित हों, संगठित हो और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करें।"4 20, मार्च, 1927 को माद तालाब सत्याग्रह में आयी हुई स्त्रियों को सम्बोध्ति करते हुए उन्होंने कहा था, यदि तुम्हारे पति और लड़के शराब पीते हों, तो उन्हें भोजन मत दो। शिक्षा जितनी जरूरी पुरुषों के लिए है, उतनी ही स्त्रियों के लिए भी जरूरी है।"5

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

डॉ० अम्बेडकर अछूतों के लिए मन्दिर प्रवेश के लिए सत्याग्रह भी चलाया, परन्तु इसे वे अधिक महत्व नहीं देते थे। उनका मत था कि दलित–वर्ग अपना समय और क्षमताएँ मन्दिर प्रवेश जैसी निरर्थक बातों में व्यय करने की अपेक्षा उच्च शिक्षा, अच्छे रोजगारों में प्रवेश पाने तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने के प्रयत्नों में लगायेंगे, तो निश्चित रूप से उनके सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी। दलितों की स्थिति में सुधार का एक उपाय उन्होंने बतलाया था–"भारत का औद्योगीकरण"। यह सुझाव उनकी दूरदर्शिता और यथार्थवादिता का परिचायक है।

डॉ० अम्बेडकर ने दलित–आन्दोलन को सामाजिक संरचना के परिप्रेक्ष्य में देखा और विश्लेषण किया। इसमें सामाजिक व्यवस्था भी समाहित होती है। इस व्यवस्था के तहत जाति, धर्म और कार्यों के अनुसार व्यक्ति विभाजित होता है। अस्पृश्य जातियों अथवा दलितों का शोषण इसी सामाजिक व्यवस्था में हो रहा है। इस व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए ही दलित आन्दोलन कर रहे हैं। आन्दोलन के दौरान मात्रा संरचनात्मक परिवर्तन ही नहीं होते, वरन् संस्थागत ढाँचे में तथा आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं और मूल्यों में भी बदलाव होते हैं। बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर हिन्दू धर्मशास्त्रों की उन बातों से घृणा करते थे, जो बातें अस्पृश्यता, जातिवाद और वर्णवाद को प्रश्रय देती थीं। उनका कहना था अतः जातिगत भेद उत्पन्न करने वाली बातों को इन धर्म–ग्रन्थों में से निकाल देना चाहिए और आज इन ग्रन्थों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है।"6 उन्होंने अपनी विचारधरा को क्रांतिकारी रूप देने हेतु अनेक संगठनों की स्थापना जैसे–समता सैनिक दल, शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन, दी पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी दलित विद्यार्थी फेडरेशन, रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया, बहिष्कृत हितकारिणी सभा, डिप्रेस्ड क्लास एजुकेशन सोसाइटी आदि। इन संस्थाओं के माध्यम से अम्बेडकर ने दलित–समाज में चेतना उत्पन्न करने का यथासम्भव प्रयास किया ओर किसी सीमा तक उन्हें सपफलता भी प्राप्त हुई। उनका मानना था कि सामाजिक और आर्थिक अधिकार तब तक प्रभावकारी नहीं हो सकते है। जब तक दलितों को शासन में भागीदारी प्राप्त नहीं होती। शायद इसीलिए दलितों और श्रमिकों को राजनैतिक शक्ति के रूप संगठित करने के उद्देश्य से डॉ० अम्बेडकर ने 1936 में ही। 'इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी' का गठन किया था।

डॉ० अम्बेडकर दलितों को एक बड़ी राजनीतिक शक्ति का रूप देना चाहते थे। वे दलितों के लिए पृथक् प्रतिनिधित्व चाहते थे, जिसमें दलितों के प्रतिनिधि केवल दलितों द्वारा ही चुने जायें। पहले और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में उन्होंने दलितों के लिए पृथक् प्रतिनिधित्व पर ही सबसे अधिक जोर दिया था और महात्मा गांधी जी के साथ उनका विरोध सबसे अधिक प्रमुख रूप से इसी बात पर था।7

डॉ० अम्बेडकर का विचार था कि धर्म और दासता दोनों एक स्थान पर नहीं रह सकते और अधिकार कठिन संघर्ष से ही प्राप्त किये जाते हैं। वे पूरी सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न करते हैं और दलितों की शोचनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। उन्होंने प्रश्न किया, क्या दासता अथवा अस्पृश्यता के अन्तर्गत शिक्षा, सद्गुण, आनन्द, संस्कृति और धन सम्पत्ति सम्भव है?" दासता की भाँति अस्पृश्यता में एक स्वतंत्रा समाज–व्यवस्था के लाभ कतई नहीं है। उन्होंने दास और अस्पृश्यता को लेकर जो तर्क उपस्थित किया है, वह सत्य को उद्घटित करता है। उनकी इसी पीड़ा को दर्शाता है अस्पृश्य जातियाँ गुलामों से बदतर जिन्दगी जीती हैं। आन्तरिक पीड़ा के कारण ही दलित–आन्दोलन को उन्होंने जुझारू, चेतनाशील बनाया और अपनी जाति को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया।8 सम्पूर्ण दलित–आन्दोलन में दो मुख्य धराएँ समानान्तर रूप से कार्य कर रही थीं पहला सामाजिक समानता के लिए संघर्ष और दूसरा सांस्कृतिक गुलामी से छुटकारा अथवा मुक्ति। इन्हीं लक्ष्यों को लेकर डॉ० भीमराव अम्बेडकर दलित–आन्दोलन कर रहे थे। शायद इसीलिए उन्हें दलित–आन्दोलन का पिता कहा जाता है, क्योंकि वह प्रथम विद्वान और प्रतिभाशाली दलितों के नेता थे, जिन्होंने हर मोर्चे के लिए दलितों को तैयार करने का प्रयास किया, उन्हें संघर्षशील बनाया। उनके समग्र दलित–आन्दोलन का मुख्य आधर था 1. धर्मिक कर्मकाण्ड और ब्राह्मण तथा ब्राह्मण वर्चस्व का विरोध करना 2. दलितों के आत्मसम्मान की रक्षा 3. समतामूलक समाज 4. सामाजिक न्याय 5. जाति–भेद और वर्ण–भेद। की समाप्ति।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कैवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद ।
2. डी०आर० जाटव, अम्बेडकर के समाजशास्त्रीय विचार, समता साहित्य भवन, जयपुर, पृ० 44–45।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*